विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -08- 10-2020**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -10 शक्ति और क्षमा कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

शक्ति और क्षमा पाठ-सार

इस पाठ में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ' दिनकर' द्वारा रचित

' कुरुक्षेत्र' काव्य से संकलित कवितांश है। इसमें क्षमा, दया,

सहनशीलता आदि गुणों का महत्त्व बताया गया है। परन्तु

इन गुणों का आदर तभी होता है, जब उस व्यक्ति में शक्ति

एवं साहस हो।

सप्रसंग व्याख्याएँ

(1) क्षमा, दया, तप उतना ही।

कठिन शब्दार्थ-नर व्याघ्र-बाघ के समान शक्तिशाली और

चालाक व्यक्ति। सुयोधन = दुर्योधन। रिपु = शत्रु। समक्ष =

सामने। विनत = विनम्र।

प्रसंग-यह पद्यांश ' शक्ति और क्षमा' पाठ से लिया गया है।

यह रामधारी सिंह ' दिनकर' द्वारा रचित है। महाभारत के युद्ध

के बाद भीष्म पितामह युधिष्ठिर को समझाते हैं। यह. उन्हीं

का कथन है।

व्याख्या-भीष्म पितामह ने कहा कि हे युधिष्ठिर! तुमने कौरवों

को शान्त करने के लिए क्षमा, दया, तप, त्याग और मनोबल आदि सब का सहारा लिया, अर्थात् हर तरीके से उन्हें शान्त कराना चाहा, परन्तु हे शक्तिशाली युधिष्ठिर! तुमसे दुर्योधन कहाँ हारा, वह कब शान्त हो सका? भाव यह है कि वह तो सदा ही तुमसे चालाकी दिखाकर जीतता रहा। तुम अपने शत्रु दुर्योधन के सामने क्षमाशील बनकर जितना ही विनम्र आचरण करते रहे, दुष्ट कौरवों ने तुमको उतना ही कायर या कमजोर समझा। अर्थात् तुम्हारी विनम्रता को तुम्हारी कमजोरी समझा और वे तुम्हें सदा दबाते रहे।

लिखकर याद करें।